क्षपणासार विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
मगलाचरण	१
चारित्रमोह क्षपणाधिकार	
चारित्रमोह की क्षपणा मे प्रतिपाद्य अधिकार	१
अधः प्रवृत्तकरण मे होने वाली क्रियाए	१
अपूर्वकरण का वर्णन	६
यहा होने वाली गुणश्रेणिका कथन	१०
गुण संक्रम के विषय मे निर्देश	१०
अपकर्षण व उत्कर्षण सम्बन्धी अतिस्थापनादि का कथन	११
अपूर्वकरण मे जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति खण्ड के प्रमाण का निर्देश	१८
उक्त करण में प्रथम व चरम समय मे स्थितिखण्डादि के प्रमाण का निर्देश	२०
एक स्थिति काण्डक के पतन मे सहस्रो अनुभाग काण्डक घात होते हैं	२१
अनुभाग काण्डक किनके होता है ?	२२
अपूर्वकरण मे किस क्रम से किन-किन प्रकृतियो का बन्धव्युच्छेद होता है ?	२२
अनिवृत्तिकरण सम्बन्धी कथन	२३
अनिवृत्तिकरण गुण स्थान मे स्थिति खण्ड प्रमाण	२४
अनिवृत्तिकरण के प्रथम समय मे स्थिति बन्ध	
स्थिति सत्त्व आदि का निर्देश	२६
स्थिति बन्धापसरण का क्रम निर्देश	२६
स्थिति सत्त्वापरण का कथन	३३
सत्त्व के क्रमकरण के बाद यथास्थान असंख्यात समय-प्रबद्ध की उदीरणा	३६
स्थितिबन्ध और स्थितिसत्त्व सम्बन्धी क्रमकरण के कथन के पश्चात् ८ कषाय व १६ प्रकृतियोका क्षपण-करणाधिकार	३६
देशघातिकरण का कथन	४२
अन्तरकरण का कथन	४३

विषय	पृष्ठ
सक्रमणकरण का प्रतिपादन	४६
सक्रम द्वारा नपुसक वेद की क्षपणा	४८
नपुसक वेद के सक्रमणकाल मे बन्ध, उदय व संक्रम के माध्यम से प्रदेश विषयक अल्पबहुत्व का कथन	४९
उदय और सक्रमण की निरन्तर गुणश्रेणि	५०
स्त्रीवेद सक्रमण मे होने वाले कार्यो का निर्देश	५१
सात नो कषाय के सक्रमण काल मे होने वाले कार्य	५१
अश्वकर्णकरण के स्वरूप निर्देश पूर्वक सज्वलन चतुष्क के अनुभाग का अश्वकर्ण क्रिया का विधान तथा उसमे होने वाले कार्यो का निर्देश	६४
अश्वकर्णकरण के प्रथम समय मे होने वाले अपूर्व-स्पर्धको का कथन	६८
अपूर्वस्पर्धक की रचना मे पाया जानेव ाला द्रव्य का परिमाण	७२
लोभादिक के स्पर्धको की वर्गणा सम्बन्धी विशेष विचार, प्रकृत मे गणित सूत्र, क्रोधादि के काण्डक व उनकी शलाका आदि का कथन	७६
प्रकृत अल्प बहुत्व	८१
अश्वकर्णकरण के प्रथम समय मे उक्त स्पर्धको मे से उदय बन्ध को प्राप्त स्पर्धको का कथन	८२
प्रकृत मे दृश्यमान द्रव्य का कथन	८६
प्रथम अनुभागकाण्डक होने पर होने वाला कार्य	८६
अश्वकर्णकरण के प्रथमादि समयो मे क्रमशः घटते क्रम से अपूर्व स्पर्धक रचना	८७
प्रकृत मे स्पर्धक की वर्गणा मे अविभागी प्रतिच्छेद की अपेक्षा अल्पबहुत्व	८७
अश्वकर्णकरण मे प्रथम अनुभागखण्ड पतित होने पर स्पर्धक आदि मे अल्पबहुत्व	८८
अश्वकर्णकरण के चरम समय मे स्थितिबन्ध व सत्त्व	९१
आगे बादर कृष्टिकरण के कालका प्रमाण जानने के उपाय	९३

विषय	पृष्ठ
कृष्टिया कौनसे द्रव्य से करता है इसका निर्देश	९३
अपकर्षित द्रव्य का विभाजन	९३
सग्रह एव अवयव कृष्टि की अपेक्षा कृष्टियो की सख्या	९४
कृष्टि मे द्रव्य विभाजन सम्बन्धी निर्देश	९४
प्रथमादि बारह सग्रह कृष्टि का आयाम पल्यके असख्यातवें भाग के क्रम से घटता है	९६
किस कषायोदय से श्रेणी चढने वाले के कितनी सग्रह कृष्टिया होती हैं	९९
अन्तर कृष्टियो की सख्या व उनका क्रम	९९
उक्त कथन विशेष स्पष्टीकरण	१००
लोभ की जघन्यकृष्टि के द्रव्य से क्रोध की उत्कृष्ट-कृष्टि पर्यन्त देयद्रव्य	१०५
पार्श्वकृष्टि सम्बन्धी विधान	१०६
द्रव्य देने का क्रम, कृष्टि भेद तथा उष्ट्रकूट रचना का कथन	१०७
अनुभाग की अपेक्षा कृष्टि व स्पर्धक का लक्षण	१११
कृष्टिकारक कृष्टिका भोग नहीं करता, इसका निर्देश एव कृष्टिकरण काल समाप्ति का निर्देश	१११
कृष्टिवेदनाधिकार—	
कृष्टिवेदन तथा इसके प्रथम समय में होने वाले बन्ध-सत्त्व का निर्देश	११२
प्रकृत मे उच्छिष्टावली, नवकप्रबद्ध के अनुभाग का निर्देश	११२
कृष्टिकारक व वेदक के क्रम तथा प्रथम सग्रह कृष्टि का पहले वेदन होता है इसका निर्देश	११३
कृष्टि वेदक के प्राथमिक समय मे होने वाले कार्य	११४
प्रकृत मे उदीयमान कृष्टि, बन्ध कृष्टियों का निर्देश	११५
प्रकृत मे अल्पबहुत्व	११६
द्वितीयादि समयो मे उक्त विषय का विशेषस्पष्टी-करण	११७
प्रति समय मे इन कृष्टियो का बन्ध-उदय कैसे होता है इसका निर्देश	११९
सक्रमण द्रव्य का विधान	१२०
प्रति समय होने वाली अपवर्तन की प्रवृत्तिका क्रम	१२३

विषय	पृष्ठ
परस्थान व स्वस्थान गोपुच्छ का नाश	१२३
आय और व्यय द्रव्य का कथन	१२४
स्वस्थान-परस्थान गोपुच्छ के सद्भाव का विधान	१२४
मध्यम खण्डादि करने का कथन	१२४
विरच्यमाण अपूर्व कृष्टियो का विधान	१२९
कृष्टियो के घात का कथन	१३२
क्रोध की प्रथम सग्रह कृष्टि की प्रथम स्थिति मे समयाधिक आवलीकाल शेष रहने की अवस्था	१३३
सग्रह कृष्टियो के चरम समय मे फाली के देने का विधान	१३६
द्वितीय सग्रह वेदक के उदयादि का विधान प्रथम सग्रहवत् है	१३७
क्रोध की द्वितीय सग्रह का स्वस्थान-परस्थान सक्रमण की सीमा	१३७
स्वस्थान-परस्थान सक्रमण मे नियम का विशेष स्पष्टीकरण	१३८
प्रकृत मे किस-किस कृष्टि का सक्रमण नही है	१३९
वेद्यमान व अवेद्यमान सग्रह कृष्टि के बन्ध अबन्ध का निर्देश	१३९
सग्रह कृष्टियो मे अवयव कृष्टियो के द्रव्य का अल्पबहुत्व	१४०
वेद्यमान कृष्टि की प्रथम स्थिति मे समयाधिक आवली शेष रहने पर होने वाली स्थिति एव कार्य	१४१
द्वितीय सग्रह वेदक के चरम स्थिति बन्ध व सत्त्व	१४२
क्रोध की तृतीय सग्रह की प्रथम स्थिति स्थापना तथा चरम समय क्रोध वेदक के बन्ध-सत्त्व	१४३
मान की प्रथम स्थिति स्थापना तथा उसका प्रमाण	१४३
मान की प्रथम सग्रह कृष्टि का वेदन प्रकार क्रोध-वत् तथा चरम समय मे बन्ध सत्त्व का निर्देश	१४४
मान की द्वितीय सग्रह कृष्टि का वेदन तथा इसके चरम समय मे बन्ध-सत्त्वका निर्देश	१४५
तृतीय सग्रह का वेदन तथा अन्त मे बन्ध-सत्त्व	१४६
माया की प्रथम द्वितीयआदि कृष्टियोके वेदनका वर्णन तथा वहा दो चरम समयमे होनेवाला बन्ध-सत्त्व	१४७

विषय	पृष्ठ
प्रति समय असख्यात गुणी हीन कृष्टि रचना तथा दीयमान द्रव्य मे असख्यात गुणी क्रमता	१५३
सूक्ष्म कृष्टि करण के समय मे दीयमान द्रव्य का विशेषहीन आदि रूप क्रम	१५४
द्वितीयादि समयो मे क्रियमाण अधस्तन कृष्टि व अन्तरकृष्टि निर्देश एव उनका प्रमाण प्ररूपण	१५४
द्वितीयादि समयो मे दीयमान द्रव्य सम्बन्धी कथन	१५५
सूक्ष्म कृष्टियो को करने वाले के दृश्यमान प्रदेश पुज	१५६
प्रकृत मे सक्रम्यमाण प्रदेशाग्रका अल्पबहुत्व	१५६
सूक्ष्म कृष्टि मे सक्रान्त द्रव्य के प्रमाण को प्राप्त करने का साधकभूत बादर कृष्टियो मे सक्रान्त प्रदेशाग्र का अल्पबहुत्व	१५७
लोभ की द्वितीय सग्रह कृष्टि से तृतीय सग्रह कृष्टि मे सक्रमण करने की अवधि	१६०
बादर लोभ की प्रथम स्थिति मे समयाधिक आवली शेष रहने पर तृतीय व किंचिदून तृतीय कृष्टिका सूक्ष्म रूप परिणमना	१६०
नवम गुण स्थान के चरम समय मे स्थिति बन्ध निर्देश	१६१
नवम गुण स्थान के चरम समय मे स्थिति सत्त्व निर्देश	१६१
सूक्ष्म साम्पराय का कथन	१६२
पर्वत्रय के कथनपूर्वक अवस्थित गुण श्रेणि का आयाम	१६३
अपकृष्ट द्रव्य के देने का विधान	१६३
द्वितीयादि समयो मे दिया गया द्रव्य	१६४
प्रथम समयवर्ती सूक्ष्म साम्पराय के दृश्यमान प्रदेशाग्र की श्रेणि प्ररूपणा	१६६
चरम निषेक का द्रव्य प्रमाण तथा दीयमान द्रव्य की प्ररूपणा	१६६
प्रकृत मे दृश्यमान द्रव्य	१६८
द्वितीय स्थिति काण्डक के प्रथमादि समयो मे गुण श्रेणी शीर्ष का अल्पबहुत्व	१६८

विषय	पृष्ठ
सूक्ष्म साम्पराय गुण स्थान के प्रथम समय मे मोह की गुण श्रेणी अन्तरायाम आदि का अल्पबहुत्व	१६९
द्वितीयादि काण्डको के काल मे गुण श्रेणी के ऊपर गोपुच्छता का निर्देश	
अधस्तन अनुदीर्ण, उपरिम अनुदीर्ण, मध्यम अनुदीर्ण कृष्टियों का अल्पबहुत्व	१७०
सूक्ष्म साम्पराय मे क्षपक के अन्त मे होने वाली गुण श्रेणी का निर्देश	१७०
प्रकृत मे दीयमान और दृश्यमान द्रव्य का निर्देश	१७२
चरम काण्डक के पश्चात् काण्डक घात के अभाव के प्रतिपादन पूर्वक मोह के स्थिति सत्त्व का निर्देश	१७३
सूक्ष्म साम्पराय गुण स्थान के चरम समय मे बन्ध का प्ररूपण	१७४
उक्त गुण स्थान के चरम समय मे ही स्थिति सत्त्व का निर्देश	१७४
क्षीणकषाय के स्थिति-अनुभाग बन्ध के अभाव का कथन	१७४
क्षीण कषाय गुण स्थान मे स्थिति-अनुभाग काण्डक घात का प्रमाण	१७६
क्षीण कषाय के चरम काण्डक का ग्रहण तथा वहा पर देयादि द्रव्य का विधान	१७७
क्षीण कषाय को कृतकृत्यक सज्ञा की प्राप्ति तथा इसके द्विचरम मे उदय-व्युच्छिन्न प्रकृति का निर्देश	१७८
मानादि कषायत्रय सहित श्रेण्यारोहक जीव के विषय मे प्रथम स्थिति आदि का विशेष निर्देश	१७९
स्त्री वेदोदय सहित श्रेण्यारोहक जीव के स्त्री वेद की प्रथम स्थिति के प्रमाणादि का निर्देश	१८२
नपुसक वेदोदय सहित श्रेण्यारोहक जीव के प्रथम स्थिति प्रमाणादि के विषय मे विशेष कथन	१८३
क्षीण कषाय के चरम समय मे सत्व व्युच्छिन्न प्रकृतियो का निर्देश	१८४
अनन्त चतुष्टय की उत्पत्ति का कारण व इसकी विशेषता	१८५
किस कर्म के नाश से कौनसा गुण स्थान होता है ?	१८५

विषय	पृष्ठ
अनन्त सुख की उत्पत्ति का कारण तथा उसकी विशेषताए	१८६
क्षायिक सम्यक्त्व तथा उत्कृष्ट चारित्र की उत्पत्ति का कारण	१८७
असाता वेदनीय के उदय से केवली भगवान् के क्षुधादि-परीषह पाये जाते हैं तथा उनके आहारादि-क्रिया होती है ऐसी असत् मान्यता का परिहार	१८७
इन्द्रिय सुख की परिभाषा	१८७
केवली साता असाता जन्य सुख-दुःख के अभाव का कारण	१८८
केवली के साता वेदनीयका एक समय स्थिति वाला उदयरूप स्थिति बन्ध होता है इसका निर्देश	१८८
सयोग केवली के प्रति समय होने वाले नोकर्माहार तथा उसकी स्थिति का कथन	१९६
समुद्घातगत केवली के तीन समयो तक नोकर्म-आहार का अभाव पाया जाता है	१९६
पश्चिम स्कंधद्वार कथन के अन्तर्गत केवली समुद्-घात के निर्देश पूर्वक केवली समुद्घात के अन्तर्गत आवर्जितकरण तथा इसके पूर्व एव बाद मे होने वाले क्रिया विशेषो का कथन	१९६
योग निरोध का प्ररूपण	२०३
सूक्ष्म योग, अपूर्वस्पर्धक सृजन, प्रति समय असख्यात-गुणा अपकर्षण, किन्तु अपूर्वस्पर्धक असख्यातगुणा हीन क्रम से सृजन तथा अपूर्वस्पर्धक के प्रमाण का कथन	२०६
सूक्ष्म कृष्टिकरण का प्रमाण, प्रथम समय मे कृष्टि द्वितीयादि समयो मे असख्यात गुण प्रदेशो का अपकर्षण नवीन कृष्टि निर्माण तथा कृष्टि प्रमाण का निर्देश	२०८
योग के अपूर्व स्पर्धक तथा सूक्ष्मकृष्टि आदि के सम्बन्ध मे कथन	२१०
कृष्टिकरण के अनन्तर समय मे सकल स्पर्धको का कृष्टिरूप परिणमन, योग कृष्टियो का हीन क्रम से वेदन	२१०
सयोगी जिनके तृतीय शुक्ल ध्यान का प्ररूपण तथा अन्त मे नाश को प्राप्त योग कृष्टि	२१२
अघातिया कर्मों का चरम स्थिति काण्डक तथा चरम समय मे होने वाली समस्थिति का कथन	२१३
अयोगी जिन व उनके ध्यान	२१५
अयोगी के शुक्ल ध्यान द्वारा नाशित प्रकृतिया	२१६
अष्टम पृथ्वी का वर्णन	२१७
प्रथम एव द्वितीय शुक्ल ध्यान का अधिकार	२१८
सिद्धो से रत्नत्रयकी शुद्धि व समाधि की याचना	२२६
क्षपणाधिकार चूलिका—	
दर्शनमोह और चारित्रमोह कर्म प्रकृतियो की क्षपणाविधि पूर्व मे कही गई उसका उपसहार करते हुए चूलिका रूप व्याख्यान	२३१